शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 6, अंक : 05 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, मंगलवार
6 अप्रैल, 2021
मूल्य ₹ 2.00

www.shashwattimes.com

सीएम योगी ने लगवाई कोरोना वायरस वैक्सीन की पहली डोज...6

सी एस ए करेगा बेल पर शोध: निदेशक शोध

शाश्वत टाईम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर एवं बागवान भाइयों के यहां रोपित बेल के पेड़ों में फल झड़ने, पत्तियां व टहनियां सूखने की समस्या आ रही है तथा जो फल लगे हुए हैं वे पेड़ पर ही सूख रहे हैं तथा पौधे भी सूख रहे हैं जिससे उत्पादन प्रभावित हो रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के कुशल मार्गदर्शन एवं निदेशक शोध की अध्यक्षता में गठित समिति जिसमें डॉ वीके त्रिपाठी, डॉ एसके विश्वास, डॉक्टर वाइ पी मलिक, डॉ संजीव कुमार,डॉ रविंद्र कुमार आदि वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने गहन विचारउपरांत उक्त बेल के पौधों की समस्याओं के निराकरण हेतु शोध का निर्णय लिया है। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि बेल एक गुणकारी पौधा है अब विश्वविद्यालय बेल पर शोध करेगा। डॉक्टर प्रकाश ने कहा की बेल बहुत ही पुराना वृक्ष है भारतीय ग्रंथों में इसे दिव्य वृक्ष कहा गया है। उन्होंने कहा की बेल के अनगिनत फायदे हैं और औषधि गुण हों जैसे रतौंधी, सिरदर्द,हृदय रोग,टीवी,बदहजमी, दस्त रोकने, पीलिया और एनीमिया जैसे रोगों में काफी लाभदायक है। डॉ प्रकाश ने बताया कि भारत में बेल के फलों का क्षेत्रफल 65.06 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 973.6 मेट्रिक टन है। जबकि उत्तर प्रदेश में बेल फल का क्षेत्रफल 4.77 लाख हेक्टेयर और उत्पादन 10.5 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि इसके वृक्ष छारीय एवं बंजर भूमियों में जिन का पीएच मान 10 तक होता है आसानी से उगाए जाते हैं। तथा इसका पौधे 15 से 30 फीट तक की ऊंचाई व काफी मजबूत होते हैं। सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने बताया की बेल की सौ ग्राम खाने योग्य गूदे में 61.5 ग्राम नमी, 1.8 ग्राम प्रोटीन,0.39 ग्राम वसा, 31.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 1.7 ग्राम खनिज लवण, 55 मिलीग्राम कैरोटीन, 0 .13 मिलीग्राम थायमीन, 1.19 मिलीग्राम रिबोफ्लेविन और 8 मिलीग्राम विटामिन सी पाया जाता है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभप्रद है।

06 april_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

@janexpressliive

लखनऊ, मंगलवार, 06 अप्रैल, 2021, वर्ष : 12, अंक : 172, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

सीएसए परिसर में लगे बेल के पेड़ों में शोध का लिया निर्णय

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के परिसर और बागवानों के यहां लगे हुए बेल के पेड़ों में फल झड़ने, पत्तियां व टहनियो के सूखने के साथ ही पेड़ पर लगे हुए फलो के सूखने से उत्पादन मे पड़ने वाले प्रभाव को लेकर शोध का निर्णय कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के मार्गदर्शन एवं निदेशक शोध डॉ. एच. जी. प्रकाश की अध्यक्षता में गठित समिति डॉ. वी. के. त्रिपाठी, डॉ. एस. के. विश्वास, डॉ. वाइ. पी. मलिक, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. रविंद्र कुमार आदि वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दिया गया है।

विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉक्टर एच. जी. प्रकाश ने बताया कि बेल बहुत ही पुराना वृक्ष है जिसे भारतीय ग्रंथों में दिव्य वृक्ष भी कहा गया है इसमें बहुत से गुण पाए जाते है अपने औषधीय गुणों के चलते यह रतौंधी, सिर दर्द, हृदय रोग टीवी, बदहजमी, दस्त रोकने, पीलिया और एनीमिया जैसे रोगों में काफी लाभदायक है।

उन्होंने बताया कि भारत में बेल के फलों का क्षेत्रफल 65.06 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 973.6 मेट्रिक टन है। जबकि उत्तर प्रदेश में बेल फल का क्षेत्रफल 4.77 लाख हेक्टेयर और उत्पादन 10.5 लाख मैट्रिक टन है। सहायक निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्र ने बताया की बेल की सौ ग्राम खाने योग्य गूदे में 61.5 ग्राम नमी, 1.8 ग्राम प्रोटीन, 0.39 ग्राम वसा, 31.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 1.7 ग्राम खनिज लवण, 55 मिलीग्राम कैरोटीन, 0.13 मिलीग्राम थायमीन, 1.19 मिलीग्राम रिबोफ्लेविन और 8 मिलीग्राम विटामिन सी पाया जाता है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद होता है।

News Expert
9 hrs · Facebook for Android ·

सी एस ए करेगा बेल पर शोध- निदेशक शोध
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर एवं बागवान भाइयों के यहां रोपित बेल के पेड़ों में फल झड़ने, पत्तियां व टहनियां सूखने की समस्या आ रही है तथा जो फल लगे हुए हैं वे पेड़ पर ही सूख रहे हैं तथा पौधे भी सूख रहे हैं जिससे उत्पादन प्रभावित हो रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के कुशल मार्गदर्शन एवं निदेशक शोध की अध्यक्षता में गठित समिति जिसमें डॉ वीके त्रिपाठी, डॉ एसके विश्वास, डॉक्टर वाइ पी मलिक, डॉ संजीव कुमार,डॉ रविंद्र कुमार आदि वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने गहन विचारउपरांत उक्त बेल के पौधों की समस्याओं के निराकरण हेतु शोध का निर्णय लिया है। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि बेल एक गुणकारी पौधा है अब विश्वविद्यालय बेल पर शोध करेगा। डॉक्टर प्रकाश ने कहा की बेल बहुत ही पुराना वृक्ष है भारतीय ग्रंथों में इसे दिव्य वृक्ष कहा गया है। उन्होंने कहा की बेल के अनगिनत फायदे हैं और औषधि गुण हों जैसे रतौंधी, सिरदर्द,हृदय रोग,टीवी,बदहजमी, दस्त रोकने, पीलिया और एनीमिया जैसे रोगों में काफी लाभदायक है। डॉ प्रकाश ने बताया कि भारत में बेल के फलों का क्षेत्रफल 65.06 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 973.6 मेट्रिक टन है। जबकि उत्तर प्रदेश में बेल फल का क्षेत्रफल 4.77 लाख हेक्टेयर और उत्पादन 10.5 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि इसके वृक्ष छारीय एवं बंजर भूमियों में जिन का पीएच मान 10 तक होता है आसानी से उगाए जाते हैं। तथा इसका पौधे 15 से 30 फीट तक की ऊंचाई व काफी मजबूत होते हैं। सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने बताया की बेल की सौ ग्राम खाने योग्य गूदे में 61.5 ग्राम नमी, 1.8 ग्राम प्रोटीन,0.39 ग्राम वसा, 31.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 1.7 ग्राम खनिज लवण, 55 मिलीग्राम कैरोटीन, 0 .13 मिलीग्राम थायमीन, 1.19 मिलीग्राम रिबोफ्लेविन और 8 मिलीग्राम विटामिन सी पाया जाता है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभप्रद है। (डॉ खलील खान),मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर।

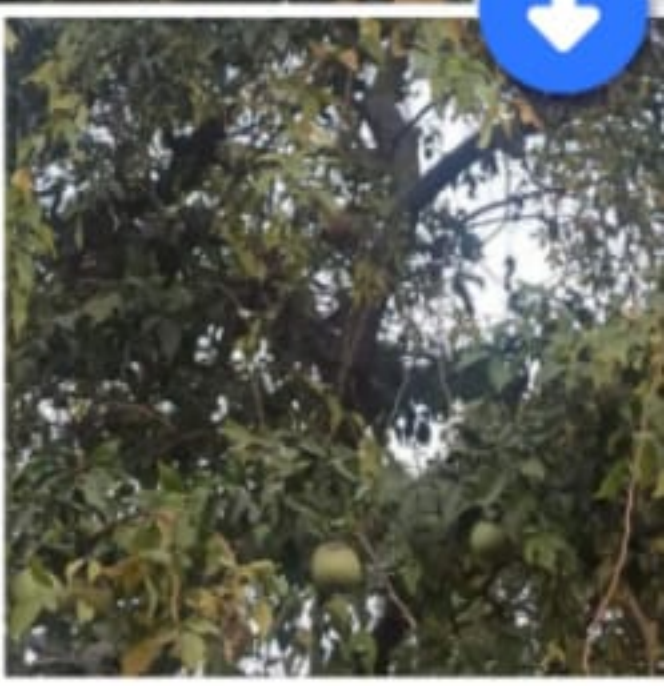

4:45 AM
08.pdf - Read-only

विशाल प्रदेश हिन्दी दैनिक
कानपुर, मंगलवार 06 अप्रैल 2021

सीएसए करेगा बेल ठ शोधः निदेशक शोध डॉ एचजी प्रकाश

कानपुर(विशाल प्रदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर एवं बागवान भाइयों के यहां रोपित बेल के पेड़ों में फल झड़ने, पत्तियां व टहनियां सूखने की समस्या आ रही है तथा जो फल लगे हुए हैं वे पेड़ पर ही सूख रहे हैं तथा पौधे भी सूख रहे हैं जिससे उत्पादन प्रभावित हो रहा है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के कुशल मार्गदर्शन एवं निदेशक शोध की अध्यक्षता में गठित समिति जिसमें डॉ वीके त्रिपाठी, डॉ एसके विश्वास, डॉक्टर वाई पी मलिक, डॉ संजीव कुमार,डॉ रविंद्र कुमार आदि वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने गहन विचारउपरांत उक्त बेल के पौधों की समस्याओं के निराकरण हेतु शोध का निर्णय लिया है डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि बेल एक गुणकारी पौधा है अब विश्वविद्यालय

बेल पर शोध करेगा डॉक्टर प्रकाश ने कहा की बेल बहुत ही पुराना वृक्ष है भारतीय ग्रंथों में इसे दिव्य वृक्ष कहा गया है उन्होंने कहा की बेल के अनगिनत फायदे हैं और औषधि गुण हों जैसे रतौंधी, सिरदर्द, हृदय रोग, टीवी, बदहजमी, दस्त रोकने, पीलिया और एनीमिया जैसे रोगों में काफी लाभदायक है डॉ प्रकाश ने बताया कि भारत में बेल के फलों का क्षेत्रफल 65.06 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 973.6 मेट्रिक टन है जबकि उत्तर प्रदेश में बेल फल का क्षेत्रफल 4.77 लाख हेक्टेयर और उत्पादन 10.5 लाख मैट्रिक टन है उन्होंने बताया कि इसके वृक्ष छारीय एवं बंजर भूमियों में जिन का पीएच मान 10 तक होता है आसानी से उगाए जाते हैं तथा इसका पौधे 15 से 30 फीट तक की ऊंचाई व काफी मजबूत होते हैं सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने बताया की बेल की सौ ग्राम खाने योग्य गूदे में 61.5 ग्राम नमी, 1.8 ग्राम प्रोटीन,0.39 ग्राम वसा, 31.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट 1.7 ग्राम खनिज लवण, 55 मिलीग्राम कैरोटीन, 0.13 मिलीग्राम थायमीन, 1.19 मिलीग्राम रिबोफ्लेविन और 8 मिलीग्राम विटामिन सी पाया जाता है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभप्रद है

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • बुधवार • 7 अप्रैल • 2021
5

सगंधीय पौधों के साथ सह फसली खेती की दी सलाह

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि ने किसानों को विभिन्न सगंधीय पौधों के साथ सहफसली खेती करने की सलाह दी है। विवि ने अपने शोध आधारित परिणामों में पाया है कि किसान सहफसली से कृषि आय आसानी से बढ़ा सकते हैं। विवि कुलपति डॉ.डीआर सिंह ने भी सहफसली के लिए किसानों को प्रोत्साहित किये जाने को लेकर कार्यक्रम संचालित करने के निर्देश दिये हैं।

किसान पौधों के साथ सहफसली खेती लगायें।

सीएसए में सहफसली पर चल रहे शोध कार्यो के परिणाम से कृषि विज्ञानी उत्साहित

सहफसली से विभिन्न नुकसानों से बचाव कर अपनी आय आसानी से बढ़ा सकते हैं किसान

विवि के सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. आशीष श्रीवास्तव के मुताबिक किसान बदलते कृषि परिवेश में सगंधीय (लेमनग्रास, पामारोजा, सिट्रोनेला आदि) पौधों के साथ पंक्ति प्रबंधन करते हुए अरहर, मक्का, गेहूं, राई, अलसी, आलू व टमाटर आदि की खेती करते हैं, तो आसानी से उनकी कृषि आय बढ़ सकती है। उन्होंने कहा कि तीनों सगंधीय पौधों फसलों के साथ सहफसली पर पिछले कई वर्षों से चल रहे शोध कार्य के परिणाम काफी उत्साहवर्द्धक आये हैं।

डॉ.श्रीवास्तव ने बताया कि गेहूं रबी की प्रमुख फसल है, लेकिन इधर यह पाया गया है कि फरवरी के अंतिम सप्ताह में अचानक तापमान में वृद्धि, तेज आंधी व असामयिक वर्षा के कारण गेहूं की फसल के कमजोर होने का डर रहता है। इस नुकसान से बचाव में सगंधीय पौधों के साथ सहफसली लाभदायक साबित हुआ है। सगंधीय फसलों के साथ गेहूं की फसल करने पर एकल फसल की तुलना में किसानों को कम हानि होती है व लाभ अधिक होता है।

नवीन शोधों से पता चला है कि एकल गेहूं की फसल से प्रति हेक्टेयर लागत ₹ 30-35 हजार आती है तथा शुद्ध लाभ ₹ 35-40 हजार होता है। इसके विपरीत अंतः फसल के साथ खेती करने से लागत ₹ 21-23 हजार प्रति हेक्टेयर व शुद्ध आय ₹ 44-48 हजार प्रति हेक्टेयर होती है। डॉ.श्रीवास्तव के मुताबिक अंतः फसलों में सगंधीय पौधों को एक बार रोपण करने के बाद चार-पांच वर्ष तक फसल रहती है। वर्ष में इसकी दो-तीन बार कटाई कर पत्तियों का तेल शोधन कर 80 से 100 किग्रा सगंधीय तैल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर सकते हैं। सगंधीय पौधों के साथ खेती करने से मुख्य फसल को अन्ना पशुओं के साथ ही कीट रोगों व अन्य व्याधियों से भी बचाया जा सकता है।

हिन्दुस्थान समाचार
578k फॉलोवर्स
फॉलो

सगंधीय पौधों के साथ सहफसली खेती से किसानों की बढ़ेगी आमदनी : डा. आशीष श्रीवास्तव

6 Apr 21 , 8:43 PM

- अन्ना पशुओं, कीट एवं रोगों के प्रकोप के साथ अन्य व्याधियों से बच जाती है मुख्य फसल

कानपुर, 06 अप्रैल (हि.स.)। किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सीएसए में बराबर शोध किये जा रहे हैं। इसी क्रम में शोध किया गया है कि किसान यदि बदलते कृषि परिवेश में सगंधीय (लेमनग्रास, पामारोजा, सिट्रोनेला) के साथ पंक्ति प्रबंधन करते हुए फसलें जैसे अरहर, मक्का, गेहूं, राई, अलसी,आलू व टमाटर की खेती करतें हैं तो अपनी आय में अतिरिक्त वृद्धि कर सकते हैं। यह बातें सीएसए के सस्य विज्ञान के डा. आशीष श्रीवास्तव ने कही।

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कुलपति डा. डी.आर. सिंह के निर्देश में मंगलवार को सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डा. आशीष श्रीवास्तव ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है।

Ad

उन्होंने बताया वर्तमान में उपरोक्त तीनों सगंधीय फसलों के साथ शोध कार्य पिछले कई वर्षों से कर रहे हैं, जिसके परिणाम काफी उत्साहवर्धक आए हैं। बताया कि गेहूं रबी की प्रमुख फसल है, जिसमें पिछले कुछ समय से पाया गया है कि फरवरी के अंतिम सप्ताह में अचानक तापमान में वृद्धि के कारण तथा तेज आंधी व असामयिक वर्षा के कारण गेहूं की फसल कमजोर होने का डर रहता है। उन्होंने बताया कि जब सगंधीय फसलों के साथ गेहूं की फसल करते हैं तो एकल फसल की तुलना में किसान को हानि कम होती है, तथा लाभ अधिक होता है।

दोगुना होती है आमदनी

डा. श्रीवास्तव ने बताया कि नवीन शोधों के परिणामों से पता चला है कि एकल गेहूं की फसल करने से प्रति हेक्टेयर लागत 30 से 35 हजार रुपये के मध्य आती है तथा शुद्ध लाभ 35 से 40 हजार होता है जबकि अंत: फसल के साथ खेती करने से लागत 21 से 23 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर जबकि शुद्ध आय 44 से 48 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर होती है। उन्होंने कहा अंत: फसलों में सगंधीय पौधों को एक बार रोपण करने के बाद चार-पांच वर्ष तक फसल रहती है। तथा वर्ष में इसकी दो तीन बार कटाई कर पत्तियों का तेल शोधन कर 80 से 100 किलोग्राम सगंधीय तेल प्रति हेक्टेयर प्राप्त करते हैं। जिससे किसान की अतिरिक्त आमदनी होती है। मीडिया प्रभारी डा. खलील खान ने डा. श्रीवास्तव के शोध को कोड करते हुए बताया कि सगंधीय पौधों के साथ खेती करने पर मुख्य फसल को अन्ना पशुओं व कीट एवं रोगों के प्रकोप तथा अन्य व्याधियों से बचाया जा सकता है।

हिन्दुस्थान समाचार/अजय/मोहित

आज

कानपुर
7 अप्रैल, 2021

सगंधीय पौधों के साथ सहफसली खेती से किसानों को लाभ

कानपुर, 6 अप्रैल। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी. आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज सस्य विज्ञान विभाग के डॉ आशीष श्रीवास्तव ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि किसान यदि बदलते कृषि परिवेश में सगंधीय (लेमनग्रास, पामारोजा, सिट्रोनेला) के साथ पंक्ति प्रबंधन करते हुए फसलें जैसे अरहर, मक्का, गेहूं, राई, अलसी,आलू व टमाटर की खेती करतें हैं तो अपनी आय में अतिरिक्त वृद्धि कर सकते हैं। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया की वर्तमान में तीनों सगंधीय फसलों के साथ शोध कार्य पिछले कई वर्षों से कर रहे हैं जिसके परिणाम काफी उत्साहवर्धक आए हैं। डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि गेहूं रबी की प्रमुख फसल है जिसमें पिछले कुछ समय से पाया गया है कि फरवरी के अंतिम सप्ताह में अचानक तापमान में वृद्धि के कारण तथा तेज आंधी व असामयिक वर्षा के कारण गेहूं की फसल कमजोर होने का डर रहता है। उन्होंने बताया कि जब सगंधीय फसलों के साथ गेहूं की फसल करते हैं। तो एकल फसल की तुलना में किसान को हानि कम होती है तथा लाभ अधिक होता है। डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि नवीन शोधों के परिणामों से पता चला है कि एकल गेहूं की फसल करने से प्रति हेक्टेयर लागत 30 से 35 हजार के मध्य आती है तथा शुद्ध लाभ 35 से 40 हजार होता है जबकि अंत फसल के साथ खेती करने से लागत 21 से 23 हजार प्रति हेक्टेयर जबकि शुद्ध आय 44 से 48 हजार प्रति हेक्टेयर होती है। उन्होंने कहा अंत फसलों में सगंधीय पौधों को एक बार रोपण करने के बाद चार-पांच वर्ष तक फसल रहती है तथा वर्ष में इसकी दो तीन बार कटाई कर पत्तियों का तेल शोधन कर 80 से 100 किलोग्राम सगंधीय तेल प्रति हेक्टेयर प्राप्त करते हैं। जिससे किसान की अतिरिक्त आमदनी होती है। उन्होंने बताया कि सगंधीय पौधों के साथ खेती करने पर मुख्य फसल को अन्ना पशुओं व कीट एवं रोगों के प्रकोप तथा अन्य व्याधियों से बचाया जा सकता है।

■ अरहर, गेहूं, टमाटर के साथ कर सकते है सगंधीय पौधरोपण

5:39 AM
07 april_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस
/janexpresslive
लखनऊ, बुधवार, 07 अप्रैल, 2021 वर्ष : 12, अंक : 173, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹3.00/-
www.janexpresslive.com/epaper

कई वर्षों से चल रहे तीनों सगंधीय फसलों के शोध कार्य के आए संतुष्ट परिणाम

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। कृषि परिवेश में बदलाव के चलते किसान सगंधीय (लेमनग्रास, पामारोजा, सिट्रोनेला) के साथ पंक्ति प्रबंधन करते हुए अरहर, मक्का, गेहूं, राई, अलसी, आलू व टमाटर जैसी फसलों की खेती कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं यह बात सीएसए के कुलपति डॉ.डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने मंगलवार को किसानों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कही। उन्होंने बताया कि पिछले कई वर्षों से तीनों सगंधीय फसलों के साथ शोध कार्य चल रहा है जिसके परिणाम काफी अच्छे आए हैं। फरवरी के अंतिम सप्ताह में अचानक तापमान में वृद्धि और तेज

आंधी व असामयिक वर्षा के कारण गेहूं की फसल कमजोर होने का डर रहता है। जबकि सगंधीय फसलों के साथ गेहूं की फसल करने पर एकल फसल की तुलना में किसान को हानि कम तथा लाभ अधिक होता है। उन्होंने कहा कि अंतः फसलों में सगंधीय पौधों को एक बार रोपण करने के बाद चार-पांच वर्ष तक फसल बनी रहती है तथा सगंधीय पौधों के साथ खेती करने पर मुख्य फसल को अन्ना पशुओं व कीट एवं रोगों के प्रकोप तथा अन्य व्याधियों से बचाया जा सकता है। डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने बताया कि एकल गेहूं की फसल करने से प्रति हेक्टेयर लागत 30 से 35 हजार के मध्य आती है तथा शुद्ध लाभ 35 से 40 हजार होता है जबकि अंतः फसल के साथ खेती करने से लागत 21 से 23 हजार प्रति हेक्टेयर जबकि शुद्ध आय 44 से 48 हजार प्रति हेक्टेयर होती है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक: अरुण कुमार त्रिपाठी द्वारा एन0बी0बी0 ग्रेफिक्स, ए-59, इंडस्ट्रियल एस्टेट, ताल कटोरा, लखनऊ से मुद्रित तथा अयूब कॉम्पलेक्स, 82/68, गुरु
[समाचार संपादक: एस.सी. शुक्ला] [आर.एन.आई. पंजीयन संख्या : UPHIN/2009/30003], फोन नं.: 0522-4330955 मोबाइल नं. 8933805555, 8

7 april 2021.pdf

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 112 कानपुर देहात, बुधवार 07 अप्रैल 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

सगंधीय पौधों के साथ सहफसली खेती से किसान भाई लें लाभ

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी. आर. सिंह के निर्देश के क्रम मे सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ आशीष श्रीवास्तव ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि किसान यदि बदलते कृषि परिवेश मे सगंधीय (लेमनग्रास, पामारोजा, सिट्रोनेला) के साथ पंक्ति प्रबंधन करते हुए फसलें जैसे अरहर, मक्का, गेहूं, राई, अलसी,आलू व टमाटर की खेती करतें हैं तो अपनी आय में अतिरिक्त वृद्धि कर सकते हैं। डॉ श्रीवास्तव ने बताया की वर्तमान में तीनों सगंधीय फसलों के साथ शोध कार्य पिछले कई वर्षों से कर रहे हैं जिसके परिणाम काफी उत्साहवर्धक आए है। उन्होंने बताया कि गेहूं रबी की प्रमुख फसल है। जिसमें पिछले कुछ समय से पाया गया है कि फरवरी के अंतिम सप्ताह में अचानक तापमान में वृद्धि के कारण तथा तेज आंधी व असामयिक वर्षा के कारण गेहूं की फसल कमजोर होने का डर रहता है। उन्होंने बताया कि जब सगंधीय फसलों के साथ गेहूं की फसल करते हैं। तो एकल फसल की तुलना में किसान को हानि कम होती है। तथा लाभ अधिक होता है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि नवीन शोधों के परिणामों से पता चला है कि एकल गेहूं की फसल करने से प्रति हेक्टेयर लागत ६30 से 35 हजार के मध्य आती है तथा शुद्ध लाभ ६ 35 से ६40 हजार होता है जबकि अंतरु फसल के साथ खेती करने से लागत ६ 21 से 23 हजार प्रति हेक्टेयर जबकि शुद्ध आय ६ 44 से 48 हजार प्रति हेक्टेयर होती है।उन्होंने कहा अंतरु फसलों में सगंधीय पौधों को एक बार रोपण करने के बाद चार–पांच वर्ष तक फसल रहती है।तथा वर्ष में इसकी दो तीन बार कटाई कर पत्तियों का तेल शोधन कर 80 से 100 किलोग्राम सगंधीय तेल प्रति हेक्टेयर प्राप्त करते हैं। जिससे किसान की अतिरिक्त आमदनी होती है। उन्होंने बताया कि सगंधीय पौधों के साथ खेती करने पर मुख्य फसल को अन्ना पशुओं व कीट एवं रोगों के प्रकोप तथा अन्य व्याधियों से बचाया जा सकता है।

असहाय विधवा महिला के प्लाट पर भूमाफियाओं दबंगो ने किया कब्जा दर दर भटक रही है महिला जिला प्रशासन खामोश।

111 (1).pdf - Read-only

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
www.shashwattimes.com

सगंधीय पौधों के साथ सहफसली खेती से लाभ

शाश्वत टाईम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी. आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ आशीष श्रीवास्तव ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि किसान यदि बदलते कृषि परिवेश में सगंधीय(लेमनग्रास, पामारोजा, सिट्रोनेला) के साथ पंक्ति प्रबंधन करते हुए फसलें जैसे अरहर, मक्का, गेहूं राई, अलसी,आलू व टमाटर की खेती करते है तो अपनी आय में अतिरिक्त वृद्धि कर सकते है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया की वर्तमान में तीनों सगंधीय फसलों के साथ शोध कार्य पिछले कई वर्षों से कर रहे है जिसके परिणाम काफी उत्साहवर्धक आए हैं। डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि गेहूं रबी की प्रमुख फसल है जिसमें पिछले कुछ समय से पाया गया है कि फरवरी के अंतिम सप्ताह में अचानक तापमान में वृद्धि के कारण तथा तेज आंधी व असामयिक वर्षा के कारण गेहूं की फसल कमजोर होने का डर रहता है। उन्होंने बताया कि जब सगंधीय फसलों के साथ गेहूं की फसल करते हैं। तो एकल फसल की तुलना में किसान को हानि कम होती है। तथा लाभ अधिक होता है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि नवीन शोधों के परिणामों से पता चला है कि एकल गेहूं की फसल करने से प्रति हेक्टेयर लागत 30 से 35 हजार के मध्य आती है तथा शुद्ध लाभ 35 से 40 हजार होता है जबकि अंत- फसल के साथ खेती करने से लागत 21 से 23 हजार प्रति हेक्टेयर जबकि शुद्ध आय 44 से 48 हजार प्रति हेक्टेयर होती है।उन्होंने कहा अंत- फसलों में सगंधीय पौधों को एक बार रोपण करने के बाद चार-पांच वर्ष तक फसल रहती है।तथा वर्ष में इसकी दो तीन बार कटाई कर पत्तियों का तेल शोधन कर 80 से 100 किलोग्राम सगंधीय तेल प्रति हेक्टेयर प्राप्त करते है। जिससे किसान की अतिरिक्त आमदनी होती है। उन्होंने बताया कि सगंधीय पौधों के साथ खेती करने पर मुख्य फसल को अन्ना पशुओं व कीट एवं रोगों के प्रकोप तथा अन्य व्याधियों से बचाया जा सकता है।

विशाल प्रदेश हिन्दी दैनिक

कानपुर, बुधवार 07 अप्रैल 2021

सगंधीय पौधों के साथ सहफसली खेती से किसान भाइयों को होगा अत्यधिक मुनाफा : डॉ आशीष श्रीवास्तव

कानपुर(विशाल प्रदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी. आर. सिंह के निर्देश के क्रम में सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ आशीष श्रीवास्तव ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि किसान यदि बदलते कृषि परिवेश में सगंधीय (लेमनग्रास, पामारोजा, सिट्रोनेला) के साथ पंक्ति प्रबंधन करते हुए फसलें जैसे अरहर, मक्का, गेहूं, राई, अलसी, आलू व टमाटर की खेती करतें हैं तो अपनी आय में अतिरिक्त वृद्धि कर सकते हैं डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया की वर्तमान में तीनों सगंधीय फसलों के साथ शोध कार्य पिछले कई वर्षों से कर रहे हैं जिसके परिणाम काफी उत्साहवर्धक आए हैं डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि गेहूं रबी की

प्रमुख फसल है जिसमें पिछले कुछ समय से पाया गया है कि फरवरी के अंतिम सप्ताह में अचानक तापमान में वृद्धि के कारण तथा तेज आंधी व असामयिक वर्षा के कारण गेहूं की फसल कमजोर होने का डर रहता है उन्होंने बताया कि जब सगंधीय फसलों के साथ गेहूं की फसल करते हैं तो एकल फसल की तुलना में किसान को हानि कम होती है तथा लाभ अधिक होता है डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि नवीन शोधों के परिणामों से पता चला है कि एकल गेहूं की फसल करने से प्रति हेक्टेयर लागत 30 से 35 हजार के मध्य आती है तथा शुद्ध लाभ 35 से 40 हजार होता है जबकि अंतः फसल के साथ खेती करने से लागत 21 से 23 हजार प्रति हेक्टेयर जबकि शुद्ध आय 44 से 48 हजार प्रति हेक्टेयर होती है उन्होंने कहा अंतः फसलों में सगंधीय पौधों को एक बार रोपण करने के बाद चार-पांच वर्ष तक फसल रहती है।तथा वर्ष में इसकी दो तीन बार कटाई कर पत्तियों का तेल शोधन कर 80 से 100 किलोग्राम सगंधीय तेल प्रति हेक्टेयर प्राप्त करते हैं जिससे किसान की अतिरिक्त आमदनी होती है उन्होंने बताया कि सगंधीय पौधों के साथ खेती करने पर मुख्य फसल को अन्ना पशुओं व कीट एवं रोगों के प्रकोप तथा अन्य व्याधियों से बचाया जा सकता है।